# ज्ञान का उत्कर्ष, तकनीकी प्रगति और समाज का विभाजन

शीतला प्रसाद तिवारी

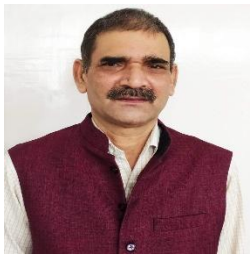

हम मानव इतिहास के अत्यंत निर्णायक काल में जी रहे हैं, किंतु हम मेँ अधिकांश को इसका बोध नहीं है। जब हम समाचार-माध्यमों पर बहस में उलझे रहते हैं, तब विज्ञान और प्रौद्योगिकी की एक मौन क्रांति हमारे अस्तित्व की मूल प्रकृति को बदल रही है। आने वाले दस वर्षों में लिए गए निर्णय यह तय करेंगे कि मानव जाति संयुक्त रूप से उन्नत होगी या स्थायी रूप से भिन्न क्षमताओं वाले वर्गों में विभाजित हो जाएगी।

यह कोई कल्पना-कथा नहीं, बल्कि वर्तमान में प्रयोगशालाओं और चिकित्सालयों में घटित हो रही वास्तविकता है। जैव-प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता मिलकर मानव को उसकी जैविक सीमाओं से आगे ले जाने में समर्थ हो रही हैं। परंतु भयावह सत्य यह है कि इन सामर्थ्यों का वितरण प्राचीनतम मानवीय नियम के अनुसार हो रहा है, प्रथम प्राप्ति सुविधा सम्पन्न,धनवानों को, शेष जन प्रतीक्षा में सूची में रहेंगे।

## मानवीय सीमाओं से परे जाने का मूल्य

वर्तमान में नवीनतम जीन-चिकित्सा की लागत प्रति रोगी एक से चार करोड़ रुपये तक है। ये उपचार उन आनुवंशिक रोगों का निदान करने में समर्थ हैं, जिन्हें पहले असाध्य माना जाता था। अनेक परिवार अपने बच्चों के जीवन हेतु यह राशि जुटाने के प्रयास में जीवन-भर की पूँजी लगा देते हैं। यह विलासिता नहीं, जीवन-मृत्यु के बीच का अंतर है और इसकी लागत महानगर के ऊँचे भवन में स्थित एक ऐश्वर्यपूर्ण निवास जितनी होती है।

कल्पना कीजिए, जब यही तकनीकें मानव जीवन को 150 या 200 वर्ष तक बढ़ाने लगेंगी; जब मस्तिष्क और प्रौद्योगिकी संपर्क आपकी स्मरण-शक्ति, विचार-गति

और ज्ञान तक पहुँच को असाधारण स्तर तक पहुँचा देंगे; जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता से युक्त सहायक टूल से  बाज़ार की गतिविधियों की पूर्वानुमान कर सकेंगे, जटिलतम समस्याएँ सुलझा सकेंगे और अभूतपूर्व धन-सृजन संभव कर देंगे।पहले इसका  लाभ किसे मिलेगा? - उन्हीं को, जो इसे क्रय कर सकेंगे।

## असमानता का गणित

यह केवल जीवन-सुविधाओं का प्रश्न नहीं है। जब धनी वर्ग सामान्य जन से दुगना जीवन जीता है, तो उसका धन-संचय केवल दुगना नहीं, कई गुना हो जाता है। उदाहरणतः दो व्यक्ति समान पूँजी से प्रारंभ करते हैं। तकनीक से युक्त/संवर्धित व्यक्ति 150 वर्ष जीवित रहकर 7% वार्षिक प्रतिफल पाता है, जबकि सामान्य व्यक्ति 75 वर्ष जीवित रहकर 6% प्रतिफल पाता है। जीवन के अंत में संवर्धित व्यक्ति का संचय असामान्य रूप से अधिक होता है और वह अपने वंशजों को यह लाभ देकर असमानता को पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्थायी कर देता है। यह मानव-क्षमता पर चक्रवृद्धि ब्याज है। जीवन का प्रत्येक अतिरिक्त वर्ष धन, प्रभाव और लाभ के विस्तार का वर्ष बन जाता है।

## भविष्य जो अभी बन रहा है

सिंगापुर, चीन और अन्य अनेक राष्ट्रों ने जैव-प्रौद्योगिकी में अरबों का निवेश किया है, किंतु इसकी पहुँच मुख्यतः निजी उपचार लेने में समर्थ वर्ग को है। मस्तिष्क- प्रौद्योगिकी  संपर्क के प्रथम परीक्षण प्रारंभ हो चुके हैं। न्यूरालिंक और अन्य कंपनियाँ पक्षाघात ग्रस्त (फालिस) रोगियों को विचारों के माध्यम से संगणक नियंत्रित करने में सक्षम बना चुकी हैं। शीघ्र ही यही चिकित्सा उपकरण संवर्धन-साधन बन जाएंगे और पहले उन्हीं लोगों को उपलब्ध होंगे, जिनके पास इसे पाने की सामर्थ्य होगी, आर्थिक क्षमता होगी।

## प्राकृतिक समानता का अंत

इतिहास में मृत्यु अकाट्य सत्य है।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥27॥

(जातस्य-वह जो जन्म लेता है; हि-के लिए; ध्रुवः-निश्चय ही; मृत्युः-मृत्युः ध्रुवम् निश्चित है; जन्म-जन्म; मृतस्य-मृत प्राणी का; च-भी; तस्मात्-इसलिए; अपरिहार्य-अर्थे-अपरिहार्य स्थिति मे; न-नहीं; त्वम्-तुम; शोचितुम्-शोक करने के लिए; अर्हसि उचित।)

साभार -www.holy-bhagavad-gita.org/

धनवान या निर्धन, सभी एक समान वृद्ध होते थे और मृत्यु का सामना करते थे। किन्तु अब दीर्घायु और असाधारण बौद्धिक क्षमता का क्रय संभव होता जा रहा है. यह मनुष्य को स्थायी रूप से भिन्न क्षमताओं वाले वर्गों में विभाजित कर देगा। आज जातियाँ है, भविष्य में असमान क्षमताओं वाले वर्ग होंगे।

## वैश्विक विभाजन और प्रभाव

राष्ट्र संवर्धन की होड़ में हैं। जो देश पहले इन तकनीकों में अग्रणी होंगे, वे आर्थिक, सैन्य और सांस्कृतिक रू से शेष संसार से सदियों आगे होंगे। यह 'संवर्धन महाशक्ति' और 'असंवर्धित राष्ट्र' की स्थायी व्यवस्था बना सकता है।

## श्रृंखला प्रभाव और स्थायी कुलीनता

दीर्घायु से धन-संचय, धन से बौद्धिक संवर्धन, संवर्धन से और अधिक धन-सृजन, यह चक्र इतना तीव्र होगा कि संवर्धित वर्ग स्थायी रूप से श्रेष्ठ बन जाएगा। यह श्रेष्ठता पदवी या भूमि पर नहीं, बल्कि जीवविज्ञान और बुद्धि पर आधारित होगी। फिर क्या किया जा सकता है-यह स्थिति अपरिहार्य नहीं है। इसके लिए वैश्विक सहयोग, नीतिगत साहस और न्यायपूर्ण वितरण की व्यवस्था आवश्यक है—जैसे संवर्धन को मानव-अधिकार घोषित करना, अंतर्राष्ट्रीय संधियाँ और आर्थिक ढाँचे तैयार करना, जिससे लाभ पूरे समाज तक पहुँचे।

## नैतिक उत्तरदायित्व

हमारे पास विकल्प है- इन तकनीकों का उपयोग सम्पूर्ण मानवता के उत्थान हेतु करना है या उन्हें असमानता के स्थायी अस्त्र में बदल देना है। यदि हमने उन्हें केवल कुछ लोगों के लिए सुरक्षित कर दिया, तो यह प्रगति नहीं, बल्कि हमारी सभ्यता की सबसे बड़ी असफलता होगी।समय अब भी है कि अगले दस वर्षों में किए गए निर्णय आने वाले अनेक शताब्दियों का मार्ग तय करेंगे। यदि विभाजन बढ़ गया, तो उसे पलटना लगभग असंभव होगा। हमें अभी सचेत हो कर यह सुनिश्चित करना होगा कि मानवता की महानतम उपलब्धियाँ सभी की हों, केवल विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग, सम्पन्न वर्ग की ही न हों। मनुष्य की समानता और मानवता का भविष्य, हमारे आज के निर्णय पर निर्भर है।

## Will Technology Unite or Divide Us? The Future of Human Equality

**Shitla Prasad Tiwari**

We stand at a pivotal moment in human history, yet most of us are unaware. While we debate on news and social media, a silent revolution in science and technology is reshaping our existence. The decisions we make in the next decade will determine whether humanity advances together or splits into groups with vastly different capabilities.

This is not science fiction, it's happening in labs and hospitals. Biotechnology and artificial intelligence (AI) are pushing humans beyond their biological limits. But access follows an age-old rule: the wealthy get first dibs, while others wait.

### The Cost of Breaking Human Limits

Gene therapies, costing ₹1-4 crore per patient, now cure once-incurable genetic diseases. Families spend life savings for survival, not luxury, a cost as high as a city skyscraper apartment. Soon, these technologies may extend life to 150 or 200 years, with brain-computer interfaces boosting memory and thinking speed. AI tools could predict markets,

**solve complex problems, and create immense wealth. Who will benefit first? Those who can pay.**

**This creates a growing divide. When the rich live twice as long, their wealth multiplies exponentially. For example, two people start with equal wealth. An enhanced person lives 150 years, earning 7% annually; an unenhanced person lives 75 years, earning 6%. The enhanced person's wealth far surpasses the other's, passing this advantage to descendants, cementing inequality for generations.**

## The Future Being Built Today

**Countries like Singapore and China are investing billions in biotechnology, but access is mostly for those who can afford private treatments. Brain-computer interfaces, like those from Neuralink, already enable paralyzed patients to control computers with thoughts. Soon, these will enhance healthy individuals, available first to the wealthy. Historically, death equalized everyone—rich or poor, all aged and died. Now, purchasable longevity and intelligence could divide humanity into biological and intellectual classes.**

**Nations racing to lead in these technologies will leap ahead in economic, military, and cultural power, potentially creating a permanent divide between "enhanced superpowers" and "unenhanced nations." Efforts to bridge this gap—global health initiatives and ethical AI frameworks—exist but are fragmented and underfunded. Without stronger action, the divide will widen, favoring those already in power.**

## The Cycle of Permanent Elites

**Longer lives lead to greater wealth, which funds more enhancements, creating more wealth. This cycle could make the enhanced class permanently dominant, based not on titles or land, but on biology and intelligence.**

**This future isn't inevitable. Global cooperation, bold policies, and fair distribution—like declaring enhancement a universal right or creating international agreements can ensure benefits reach everyone. We can use these technologies to uplift humanity or let them become tools of permanent inequality. Reserving them for a few isn't progress, it's our civilization's greatest failure.**

**The next decade's decisions will shape centuries. If the divide grows too wide, reversing it may be impossible. We must act now to ensure humanity's greatest achievements belong to all, not just a privileged few. Human equality and our future depend on today's choices.**